कला का प्राण 'रंग'

डॉ० पूनम लता सिंह
प्रवक्ता चित्रकला विभाग,
रघुनाथ गर्ल्स पी0जी0 कॉलिज, मेरठ।

जीवन हो, कला हो, यदि रंग को उसका प्राण कहा जाये तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी, यदि हम अपने चारों तरफ दृष्टिपात करें तो बिना रंगों की दुनिया की हम कल्पना भी नही कर सकते रंगों के प्रति हमारी आसक्ति शैशवावस्था से ही होती है तीन–चार माह की उम्र का शिशु भी तेज रंग बिरंगी वस्तुओं की ओर आकृष्ट होता है। रंगों में एक विचित्र प्रकार का आकर्षण होता है जो मानवीय संवेदनाओं को जागृत करता है। हमारी आँख में स्थित तंतुग्रन्थियाँ रोड्स व कोन्स रंगों को देखने में सहायता प्रदान करती है। रंग प्रकाश का गुण है कोई स्थूल वस्तु नहीं, यदि प्रकाश का अभाव हो और अन्धकार की स्थिति हो तो कोई वर्ण होता नही होता दिखाई पडता है उसमें हर वस्तु सिर्फ काली ही दिखाई देती है प्रकाश की अवस्था में ही रंगों का अस्तित्व है प्रभाव वादी कलाकारों ने अनुभव किया है कि प्रकाश के अनुसार बदल जाते है। एक ही वस्तु दिन के समय प्रकाश की अवस्थाओं के साथ भिन्न–भिन्न रंगत की दिखाई पडती है। वर्ण के महत्व को किसी भी युग में कलाकर नकार नही पायें। आदिमानव चौक, खड़िया आदि से अपनी भावाभिव्यक्ति करता था उसके पश्चात् शैनेः–शैनेः विकास की यात्रा में वर्ण पद्धति का भी विकास होता ही गया। खनिजों एवं प्राकृतिक वस्तुओं द्वारा घोट–घोटकर रंग बनाने की प्रक्रिया का स्थान आज आधुनिक युग में बहुत आसानी से उपलब्ध तैयार रेडीमेट रंगों ने ले लिया। यही नहीं विदेशी कलाकारों द्वारा विकसित रंग तकनीकों को भी वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई है। आइक बन्धुओं द्वारा विकसित किये गये तैल रंग आज पूरे विश्व के कलाकारों द्वारा प्रयुक्त किये गये जा रहे हैं। साथ ही जापान की वाटरकलर पद्धति भी कलाकारों को प्रिय है गीले रंग, सूखे रंग टैम्परा, मोम, पेस्टल आदि अनेकानेक प्रकार के रंगों से बाजार भरा पडा है। आज कलाकार अपनी इच्छा, रूचि एवं सुगमता के हिसाब से रंगों का चयन कर रहे हैं और अपनी कृतियाँ सृजित कर रहे हैं।

हमारे यहाँ लोक कलाकार चटकीले शोख रंगों का प्रयोग अपनी कला में करते आये हैं और उनकी छटा देखते ही बनती हैं। वे आसपास में सहज उपलब्ध वस्तुओं से प्राप्त रंगों को अपनी कल में प्रयुक्त करते हैं किन्हीं वैज्ञानिक नियम–कायदों में बँधे हुए नही रहते। यूँ तो हमारे यहाँ के प्राचीन शिल्पशास्त्रों में रंगों के विषय में व्यापक रूप से वर्णित किया गया है। 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' में पाँच मूल रंगों के विषय में कहा गया है– सफेद, पीला, हरा, काला एवं नीला। नाट्यशास्त्र में भी चार वर्णों का ही उल्लेख किया गया है– श्वेत, नील, रक्त एवं पीत। 'अभिलाषितार्थ चिन्तामणि' में श्वेत, रक्त, कृष्ण और पीत का वर्णन किया गया है, साथ ही उसमें वर्णों के मिश्रण के विषय में भी उल्लेख किया गया है – 'मिश्रान वर्णन तो वक्ष्थ संयोग संभावन' यही नही शिल्परत्न, मानसोल्लास आदि अनेकानेक ग्रन्थों में वर्ण से संबंधित व्यापक सामग्री प्राप्त होती है जिनमें रंग निर्माण एवं उनके प्रकारों पर सविस्तार चर्चा की गई है। भारतीय चित्र षडंग में भी वर्ण को ही चित्र का प्राण माना गया है।

आधुनिक विद्वानों ने भी वर्ण पर अपने विचार व्यक्त किये हैं। प्रसिद्ध विद्वान न्यूटन ने ही यह खोज की, कि वर्ण प्रकाश का गुण है। चित्रकला में वर्ण नियोजन व वर्ण संगति के विषय में व्यापक वर्णन किया गया है। प्रसिद्ध विद्वान ओस्टवॉल्ड ने अपना एक वर्ण निर्मित किया जिसमें उन्होने चार मुख्य वर्णों को मान्यता दी उन्होने लाल, पीले, नीले व हरे रंग का वर्ण निर्मित किया। किन्तु सबसे अधिक मान्यता प्रांग नामक विद्वान के वर्णचक्र को मिली। उन्होने तीनों मुख्य वर्ण माने–लाल, नीला और पीला तथा उनके मिश्रण से बनने वाली द्वितीया रंगते कहलाई। अधिकांश कलाकारों ने उनके वर्णचक्र को स्वीकार किया।

रंगों के विषय मे गणित जैसा कोई नियम तो नहीं बनाया जा सकता, परन्तु इसकी योजना में कलाकार की रूचि, कार्यकुशलता और परिवेश की मुख्य भूमिका होती है। विषय चयन भी रंग योजना के महत्व को प्रभावित करता है। आज हम समकालीन कलाकारों को देखते हैं तो पाते हैं कि हर कोई अपनी अलग तकनीक लेकर कार्य कर रहा है सबके माध्यम अलग है और रंगों का चयन भी सबका अपना स्वयं का ही है भारत की आधुनिक कला के पिता कहे जाने वाले गुरूदेव रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने चित्रों में काली स्याही को प्रमुखता दी। फूल पत्ती हो या मानवाकृतियाँ उन्होंने सभी को अपनी स्याही से सृजित किया और माध्यमों में भी उन्होंने कला सर्जना की, परन्तु उनकी रंग संगतियों में सदैव एक गूढ़ रहस्यमयता दृष्टिगोचर होती है। कला पर कलाकारों के परिवेश का प्रभाव सदैव दृष्टिगोचर होता है उनकी अभिरूचियाँ भी उसी के साथ ही विकसित होती हैं। बाबू मोशाय के नाम से प्रसिद्ध अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने जापानी रंग तकनीक सीखी और फिर वॉश टैक्नीक में जलरंग माध्यम से सैंकड़ों कलाकृतियों की सर्जना की। उनकी एक दूसरे में मिलती हुई रंगते एक बहुत ही सामजस्यपूर्ण रंग योजना बनाती थी। उन कृतियों में एक अनूठापन था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् यूरोपीय कला का प्रभाव, अमूर्तन आदि

में कलाकारों की रूचि जागृत हुई और विदेशी वादों का कलाकारों ने अपने–अपने ढंग से अनुसरण कर अपनी कृतियाँ सृजित करना आरंभ किया, आज हम देखते हैं तो पाते है कि भारतीय कलाकारों की रंगों से खेलने की प्रवृत्ति बढ़ती ही जा रही है। कलाकार रंगों को गिराकर, फैलाकर कितने ही प्रकार से अमूर्तन की ओर बढ़ते जा रहे हैं और उसी में नित नवीन प्रयोग करके अपनी कृतियाँ सृजित कर रहे हैं। उनके चित्रों के विषय, आकार, रूप सब कुछ रंग ही है, संपूर्ण कृतियाँ वर्ण के आवरण में ही लिपटी रहती हैं। यहीं नही, यदि हम भारत के अर्न्तराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त चचकारों की ओर देखे तो भी हम पाते हैं कि रंगों का महत्व कभी उन्होंने नही नकारा अपने जीवन का एक लंबा अन्तराल विदेश में बिताकर भारत लौटे वरिष्ठ कलाकार श्री सैयद हैदर रजा साहब भी अपनी कृतियों में लाल, पीले, नीले यहाँ तक कि काले रंग का प्रयोग करते रहे है उन्होंने काले रंग से बिन्दु पर अनेकों कृतियाँ सृजित की उनकी अमूर्तकृतियों का पूरा सौन्दर्य उनकी रंग योजनाओं में ही परिलक्षित होता है। बडें कैनवास पर चमकदार लाल रंग का बिन्दु रजा की कृतियों की प्राण रहा हैं जो किसी की भी दृष्टि को अपनी ओर आकृष्ट करने में समर्थ है। इसी श्रृंखला में भारत के सबसे जाने माने कलाकार श्री मकबूल फिदा हुसैन साहब के चित्रों में रूपाकारों को एक नवीन परिभाषा दी उनके काम का एक विशिष्ट तत्व उनकी आकृतियों का पैटर्न है जो रंग योजना की सन्धिधि से लेकर रंगतों, छायाप्रकाश क्षेत्रों में आये परिवर्तन के साथ बदलता रहा है। उनकी कृतियों में सदैव चटख रंगों का प्रयोग छाया प्रकाश के स्थान पर उन्होंने विरोधी रंगों के चौड़े तूलिकाघातों से अपनी कृतियों में एक विशेष प्रकार की दृढता उत्पन्न की है। उनकी कृतियों की अपनी एक गरिमा है इनकी रंगों में भी उनकी चित्र श्रृंखलाओं की जान है उन्होने अपनी कृतियों से भारतीय कला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचाया है और भारत में वही एक ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने विश्व पटल पर स्वयं को स्थापित किया है भारत के प्रसिद्ध कलाकारों में गुलाम रसूल संतोष भी ऐसे कलाकार हैं जिन्होंने तंत्रकला में कार्य किया। ज्यामितीय आकारों में उन्होंने प्रतीकों के रूप में रंगों का प्रयोग किया है। उन्होंने काले रंग को अंधेरे के प्रतीक के रूप में तथा पीले रंग को प्रकाश या ज्ञान का प्रतीक मानकर प्रयोग किया। उन्होंने चित्रों में परत दर परत रंग लगाकर एक विशेष प्रकार की आभा उत्पन्न की और उनके रंगों में एक परिपक्वता उत्पन्न की। उनकी कलाकृतियों में दृष्टि और मन दोनों की आवाज सुनाई देती है। तंत्रकला में उनकी प्रसिद्धि अतुलनीय है उनकी कृतियों के टैक्सचर और रंग ही आर्कषण का केन्द्र है। भारतीय कलाकारों में जहाँगीर, सबावाला, तैय्यब मेहता, गायतोण्डे, आदि अनेकानेक ऐसे कलाकार है जिनका चित्र संसार अत्यन्त आकर्षक एवं अतुलनीय है उनके चित्रों ने वैश्विक बाजार में अपना एक मुकाम हासिल किया है और बडे–बडे नीलाम घरों में उनकी कृतियों का विक्रय किया है।

सार रूप में, भारतीय कलाकारों ने अपनी कृतियों में सदैव रंग योजनाओं को लेकर संवेदनशीलता दिखाई है। और उन्होंने रंगों के मनोवैज्ञानिक प्रभावों को अपने दिमाग में रखते हुए उनका चयन किया है जिससे उनकी कला में एक विशिष्ट आयाम प्रस्तुत हुआ है। रंगों के प्रति मनुष्य की आसक्ति परमात्मा ने उसे जन्म से ही प्रदान की है। ईश्वर ने अपनी कृतियों में रंगों का अपार सौन्दर्य परिलक्षित किया है। चाहे पक्षी तितली या अनेकों जलचर हो। ईश्वर ने उनकी रचनाओं में रंगों का प्रयोग दिल खोलकर किया है। हम तो सब ईश्वर की प्रेरणा से प्रेरित होकर रंगों का चयन करते हैं और चित्र संसार की सर्जना करते हैं।

सन्दर्भ सूची :–

1. आधुनिक कला कोश –विनोद भारद्वाज।
2. भारत की समकालीन कला – एक परिप्रेक्ष्य – पी0एन0 मागो।
3. आधुनिक भारतीय चित्रकला – डा0 गिरजि किशोर अग्रवाल।
4. आधुनिक भारतीय कला – ज्योतिष जोशी।
5. कला और आधुनिक प्रवृत्तियाँ – रामचन्द्र शुक्ल।
6. समकालीन कला – राम विरंजन।